वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

अक्तूबर 2019

* प्रशंसनीय हितकर संग्राम
* मोक्ष और विकास का मार्ग
* डेरा बस्सी देव आश्रम में सत्य धर्म उत्सव और विशेष सत्संग
* आपकी ज्योति मुझे अपना असल रूप दिखवाती है
* परलोक वत के अवसर पर भगवान देवात्मा के उपदेश के कुछ अंश

प्रशंसनीय हितकर संग्राम

(1) सम्मान के योग्य बुजुर्ग साथी सेवक श्रीमान किशन सहाय जी जयपुर (राज.) स्थित काफी समय से बीमार हैं। उनकी ऐसी अवस्था का पता लगने पर एक अन्य धर्म सम्बन्धी श्रीमान K.C. Aggarwal जी लखनऊ कई महीनों से उनके पास पहुँच कर सेवाकारी हो रहे हैं। सहाय जी के सहायकारी की अनुपस्थिति में श्रीमान Aggarwal जी खाना बनाना, कपड़े धोना, सफाई आदि हर एक प्रकार की सेवा दिली भावों से करते रहे है जो कि प्रशंसनीय और सम्मान योगय है। उन्होंने सत्य धर्म बोध उत्सव में शामिल होने के लिए जयपुरर में 3 जनों को प्रेरित किया है। Aggarwal जी स्वयं करीब 80 साल की वृद्ध आयु में कई पत्रों से बीमार एवं कमजोर हैं। ऐसी अवस्था रखकर भी यह सभा सत्संग के इंतजार में रहते व इसमें शामिल होने के लिए हर जगह बड़ी खुशी से पहुँचते हैं। अभी अभी यह जयपुर से अपने घर लखनऊ एक खास परिवारिक जन की सहायता के लिए गये हैं। इनका इस प्रकार का संग्राम दिल को झुकाने वाला है।

(2) पदमपुर जिला गंगानगर स्थित सम्मान के योगय विशेष साथी सेवा श्रीमान डा० मुन्शा सिंह जी जो कि खुद शारीरिक सेहत के हिसाब से बिमार होते हुए व बिमारी के कारण काफी शारीरिक दर्दो को सहते हुए भी इस उम्र (83 वर्ष) में भी एक अनथक सिपाही की तरह साधन संग्राम में लगे हुए हैं। वह कई वर्षों से स्थानीय देव धर्म मन्दिर में अन्य साथी सेवकों को प्रेरणा करते है व रोजना सभा करवाते हैं। कई दिनों से अब सुबह के समय शमशान भूमि में जाकर कई जनों को सभा करवा करवाा रहे हैं। श्रीमान B.P. Singh जी (टेलीफोन विभाग के अफसर) ने भी इसके लिए प्रेरणा की और वह भी बड़े उत्साह से इनके सहायक हो रहे हैं। इस इलाके में गुरु महाराज के प्रचार के काम में डा० साहब जी का बहुत बड़ा योगदान है। डा० साहब प्रचार के साथ साथ अन्य समाज सेवा के काम (पौधों को लगाना और उनकी सार समीाल करना, बिमारों को दवाईयाँ देना, पशुओं की कई सेवाएं) में बड़ी खुशी-खुशी करते रहते हैं। मैं तुच्छ जब विचार करता हूँ तो इनकी सेवाओं की गिनती भी नहीं कर सकता। डा० साहब अपनी यथा सम्भव अपनी योग्यतानुसार चारों जगतों की नित्य सेवा करते हुए तृप्ति लाभ करते हैं। इनके गुणों और सेवाकारी रूप के आगे दिल झुकने के लिए मजबूर होता है।

(3) श्रीमान प्रिंसीपल प्रकाश चन्द दिवान जी गंगानगर :- यह देव समाज के साथ बहुत बड़ी (करीब 80 वर्ष की) उम्र में आकर जुड़े थे। गुरु महाराज के प्रभावों को पाकर अपनी उम्रभर की मिथ्याओं को परे करके साधन-संग्राम को समझने व करने के लिए व्याकुलता रखते हैं। जहाँ यह खुद लोगों को पहले शास्त्रों आदि का ज्ञान समझते थे, जिसके कारण लोग इन्हे मान्यता देते थे, पर अब गुरु के प्रभावों को पाकर अपनी तरफ ध्यान ले जाने के लिए मजबूर होते हैं और दीनता को बढ़ाने के साधन करते हैं। गुरु महराज की शिक्षा को पाते हुए इनके दिल में सत्य ज्ञान को दूसरों के अन्दर फैलाने के भी बहुत वलवले जागते हैं। दूसरों को प्रेरित करके कइयों को समाज की पुस्तकें दिलवा चुके हैं ओर अपनी तरफ से खरीद कर भी उनके व अपने भले के लिए पुस्तकें देते हैं। इन्होंने अच्छी संख्या में मासिक पत्रिकाएँ भी लगवाई हुई हैं और यह सेवा बड़े चाव भाव से जारी रखी हुई है। स्वयं उम्र के लिहाज़ में से कई शारीरिक और अन्य कई उलझनों के बावजूद सभा प्रोग्रामों में बड़े चाव से पहुँचते हैं और इसके लिए दूसरों को भी प्रेरित करते हैं। इनका इस अवस्था में इस प्रकार उत्साह देख कर अन्य धर्म सम्बन्धी भी प्रेरित होते हैं और इन पर मान करते हैं।

(रिपोर्ट 31-08-2019)

धर्म जीवन

खण्ड 32 अंक 10
अक्तूबर 2019
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

मोक्ष और विकास का मार्ग

हमारी धर्म समाज में एक बहुत कीमती वा अर्थ प्रधान शब्द प्रचलित है:-

"उच्च जीवन के उच्च ही फल हैं, वृथा प्रचार सभी निष्फल हैं"।

यह शब्द सुनहरी अक्षरों में लिखे जाने के योग्य हैं और अपने हृदय में हर धर्म अभिलाषी के लिए, गहरा उतारने की आवश्यकता है। यह शब्द संकेत देते हैं कि मुख्य वा असल वस्तु उच्च जीवन है, इसको कभी और किसी कीमत पर भी हृदय से ओझल नहीं करना चाहिए। यदि उच्च जीवन है तो प्रचार अपने आप होगा, उसके ठोस फल निकलेगें ही और प्रचार वृथा नहीं जाएगा।

गुरू महाराज ने बार बार हमारा ध्यान इस सच्चाई की ओर फेरा है, उन्होंने फरमाया है:-

"तुम जीवन लाभ करके ही किसी को जीवन दे सकते हो"

"यदि तुम स्वंय नीच गतियों से नहीं बच सकते, तो तुम औरों को भी नीच गतियों से नहीं बचा सकते।"

"जब तक कर्मचारी का अपना जीवन न बनें, तब तक वह किसी और का जीवन नहीं बचा सकता।"

"बनाने का काम पहले करने की अवश्यकता है, पहले कोई खुद बनें, फिर बनाने का काम करें।"

उच्च जीवन के लिए मोक्ष और विकास की तीव्र इच्छा और उसके लिए संग्राम की अवश्यकता है। इस इच्छा और संग्राम के बिना हमारे प्रचार, हमारे सत्संग सभाएं, हमारे अधिवेशन और शिविर सब निष्फल हैं। सब फोके फायरों के समान है। उनका कोई उच्च फल नहीं निकलता। कागजी फूल कभी सुगन्ध नहीं देते।

इसलिए हमारे लिए यह अति अवश्यक है कि हम देखें कि हम उच्च जीवन आकांक्षी बन गए हैं? क्या हमारे भीतर आत्म-हित अभिलाषा जाग गई है? क्या हमारा कोई मोक्ष और विकास का संग्राम आरम्भ हो गया है, या हम अपना निज का साधन करके, कुछ महिमा के गीत गाकर, किसी अंश कभी प्रभावित होकर, कभी कुछ महिमा देखकर और कभी कुछ अपनी कमी देखकर ही सन्तुष्ट हैं। इसी को अपना हित का मार्ग समझकर अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं। और इसी अवस्था द्वारा ही मोक्ष और विकास की प्राप्ति की आशा कर रहे हैं।

हमें यह बहुत अच्छी तरह जान लेना चाहिए कि मोक्ष और विकास का विशेष निर्धारित मार्ग है। उसको जानना और पूरा करना अति आवश्यक है। उस मार्ग को जाने बिना कोई जन उच्च जीवन प्राप्त नहीं कर सकता।

सबसे पहले अवश्यकता है अपने अंह को प्रकृत रूप में देखने, जानने और उससे विरत होने का संग्राम करने की। अंह के काफी मात्रा में घटने वा नष्ट हुए बिना किसी भी मनुष्य को देवात्मा के अद्वितीय देव प्रभावों का गुजारे योग्य मिलना भी असम्भव है। मनुष्य के लिए देव प्रभावों की प्राप्ति के मार्ग में अंह पहाड़ जितनी अड़चन है। इसका दमन होना वा नष्ट होना आवश्यक है। इसके बिना देव ज्योति के पाने का सिलसिला चल ही नहीं सकता।

देवात्मा की ज्योति बराबर पाए बिना मनुष्य को सारे नीच अनुरागों का प्रकृत ज्ञान नहीं हो सकता।

इसलिए प्रत्येक सच्चे जीवन अभिलाषी के लिए अपने साधनों में गुरू महाराज की ज्योति में अपनी कमियां, नीचताएं, दुष्टताएं, अपने अपराधों को देखना और हररोज़ घन्टा भर उनको लिखना अवश्यक है। जो ऐसा साधन कई वर्षो तक निरन्तर जारी नहीं रख सकता, वह अपने अंह जात घमंड और घृणा का प्रकृत रूप में दर्शन भी नहीं कर सकता। ऐसा मनुष्य मोक्ष और विकास तो एक तरफ वह अपने अति भयानक अंह को उचित मात्रा में देख भी नहीं सकता। वह इस पक्ष में अन्धा ही कबर में चला जाता है। अपने अंह को देखना वा जानना धर्म अभिलाषी जन के लिए अत्यन्त आवश्यक है। 4 - 6 महीने अपनी कमीयां वा नीचताएं लिखते रहकर कुछ कुछ रोशनी मिलने लगती है, जो हमें अपने महा रोग वा कोढ़ का ज्ञान दे सकती है और इससे मुक्त होने का फिक़र पैदा कर सकती है।

गुरू महाराज ने इस पक्ष में भी जगह जगह यह रोशनी प्रदान की है। उन्होंने फरमाया है :-

"याद रखो, 'मैं' को मारे बिना तुम्हारा कुछ नहीं बन सकेगा।"

गुरू चरणों में आकर, उनके अद्वितय मिशन का अंग बनकर, हमें अपनी 'मैं' को मारना अति आवश्यक है। हमारी "मैं" पहाड़ की तरह हमारे हित के मार्ग में अड़चन बनी हुई है।

अपनी नीचता के विषय में उपरोक्त साधन करते करते हमें देव प्रभाव मिलने लगते हैं, जो हमें हमारा घंमड और नीच घृणा दिखाते हैं और धीरे धीरे उनसे मुक्त करते हैं। अपने अंह का सच्चा बोध और उसका सच्चा खौफ और दुख हमें एक नई दुनियां में जन्म देता है और हम अपने आपको इस बोध के दाता के महा ऋणी अनुभव करते हैं और धन्य धन्य होते रहते हैं।

उपरोक्त शुभ संग्राम के अर्थात अपनी "मैं" को मारने के संग्राम के लगातार वर्ष दो वर्ष जारी रखने से धीरे धीरे नेचर का आत्मिक जगत का महान नियम पूरा होने लगता है, वह यह कि अधिकारी मनुष्य को देवात्मा के लासानी देवरूप की अनोखी झलक दिखाई देने लगती है। इस सम्बन्ध में देवात्मा ने सिद्धान्त दर्पण में विशेष रूप से लिखा हैं:-

"अधिकारी और अनाधिकारी आत्मा" इस हैडिंग से स्पष्ट किया है कि ज्यों ज्यों अंह का अधिकार घटता जाता है, वैसे-वैसे मनुष्य देव प्रभावों की प्राप्ति का अधिक अधिकारी बनता जाता है। अंह के अधिकार के विशेष सीमा में घटने से अधिकारी जनों को ऐसी विलक्षण ज्योति या प्रभावों का दान मिलता है, जो उसे देव रूप की अति सुन्दर और अति आकर्षणीय झलक दिखानी शुरू करता है और इस झलक को अधिक से अधिक देखने के योग्य होना और उसके आगे आपार दीनता से नत मस्तक होना आरम्भ हो जाता है। यही देवात्मा की सच्ची पूजा है। इससे अधिकारी मनुष्य के भीतर अपनी योग्यता के अनुसार देवात्मा के महा विशाल और महान रूप के लिए अटल विश्वास, श्रद्धा, कृतज्ञता के भाव पैदा होने लगते हैं। इनके बढ़ने से अधिकारी आत्मा को देवात्मा

के जोरदार देव प्रभावों की प्राप्ति के साथ उनका रूप अति आकर्षणीय दिखाई देने लगता है, जिससे अधिकारी आत्मा झुक झुक कर उनके साथ जुड़ा हुआ अनुभव करता है। कभी बिछड़ना नहीं चाहता। इस अवस्था में पहुंचकर इन्सान को इतने प्रभाव मिलते हैं कि वह अपने अंह अनुराग, काम अनुराग, धन सम्बन्धी अनुराग, लोभ लालच, स्वार्थ अनुराग और मोह लालसा आदि से मुक्त होने की सच्ची इच्छा महसूस करता है। ज्यों-ज्यों अधिकारी आत्मा देवात्मा के महा आकर्षणीय रूप को देख देखकर रोज रोज विस्मित होता है, त्यों-त्यों उसको उपरोक्त नीच अनुरागों से अपने आप मोक्ष प्राप्त होती जाती है और देवात्मा के साथ जोड़ने वाले सर्वोच्च भावों का विकास होता जाता है। स्वार्थ का नाश और परोपकार के भाव धीरे-धीरे विकसित होते जाते हैं। अधिकारी मनुष्यात्मा का पूर्ण जीवन सफलता के मार्ग पर अडिग पड़ जाता है और वह अक्सर धन्य-धन्य रहता है।

ऐसा अधिकारी जन जो स्वंय मोक्ष और विकास का राही बन जाता है, वह जो प्रचार आदि का संग्राम करता है वह पूर्ण निष्फल नहीं जाता।

काश! हम अधिक से अधिक संख्या में उक्त मार्ग को पहचान सकें और उसको अपनाकर अपना और दूसरों का हित कर सकें।

-बलदेव सिंह

डेरा बस्सी देव आश्रम में सत्य धर्म उत्सव और विशेष सत्संग

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी सत्य धर्म बोध उत्सव देव आश्रम डेराबस्सी में 6 सितम्बर से लेकर 8 सितम्बर तक पूरे चाव भाव और श्रद्धा से मनाया गया। इस मुबारक अवसर पर गंगानगर, पदमपुर, भटिण्डा, गोनियाना, लखनऊ, श्री अकबरपुर, अम्बाला, लुधियाना, पंचकूला, ज़ीरकपुर, गजसिंहपुर, मेरठ, मल्लेकां (सिरसा) केसूपुर, चण्डीगढ़, बलटाना आदि स्थानों से 60 के लगभग धर्म स्म्बन्धी पहुँचे। कोई पूरे समय के लिए और कुछ केवल उत्सव में शामिल हुए।

इस उत्सव से पहले विशेष सत्संग रखा गया, जिसकी सभाएं श्रीमान बलदेव सिंह जी, श्रीमान बलबहादुर सिंह जी और श्रीमान किशन सिंह जी चौहान ने करवाई। कई सभाओं में उच्च वातावरण पैदा होता रहा। सभाओं के विषय सत्संग की विशेषता, इस मुबारक अवसर की महिमा, देव प्रभावों की महिमा, अपने प्रकृत रूप को किस प्रकार भगवान की ज्योति में देखने की आवश्यकता है आदि विषयों पर ब्यान हुए, कई धर्म सम्बन्धियों ने इन सत्संग की सभाओं में बैठकर अपने उपकारियों के उपकार वर्णन किए, एक धर्म सम्बन्धी ने जो अपनी नीच घृणा के कारण उपकारी धर्म सम्बन्धी से दूर हो गया था। उन्होंने भरे दिल से आंसू बहाते हुए उपकारी धर्म सम्बन्धी के चरण छूए। नीच घृणा पर एक सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई, जो बहुत प्रभावशाली थी, और मनुष्य के कौन से सुख अनुरागों पर चोट लगने से नीच घृणा पैदा होती है, यह सब ब्यान बहुत असरदायक था। एक सभा श्रीमान बलदेव सिंह ने करवाई। विशेष मण्डल बना, जिसमें एक और धर्म सम्बन्धी ने अपने साथी से रो रोकर क्षमा मांगी। एक सभा में श्रीमान किशन सिंह जी चौहान ने अपने सौभाग्य और उपकारियों से पाए उपकारों का वर्णन किया। वह महा दान के दानी गुरु के आगे बार बार झुक रहे थे।

सत्य धर्म बोध उत्सव की प्रवेश सभा

यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इस उत्सव की क्यों आवश्कता है? सत्य धर्म बोध उत्सव क्या है? यह ऐसा उत्सव है जो हमें

अपने रूप का ज्ञान वा होश देता है। अपनी ग़ल्तियों वा कमज़ोरियों को देखकर रोने के लिए मजबूर करता है। तड़पन और दु:ख में से गुज़रकर आत्म शुद्धि की ओर ले जाता है।

सभापति जी ने इस विशेष उत्सव पर पहुंचने के लिए खड़े होकर सबका स्वागत किया। फिर कई परिवर्तन के उदाहरण प्रस्तुत किए और इस उत्सव पर लाभ उठाने के नियम बताए।

इनके ब्यान के बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने भी यात्रियों का हार्दिक स्वागत किया और सभाओं का अगले दिन का प्रोग्राम बताया।

7 सितम्बर 2019 :- इस सभा में श्रीमान बलेदव सिंह जी ने "आत्मिक अबोधता की हानियों और आत्म बोध के लाभ" के विषय में अपना ब्यान किया। मैं क्या हूँ? क्या करता हूँ? मेरा सच्चा भला वा बुरा कहां है? मेरे जीवन का लक्ष्य क्या है? जीवन का लक्ष्य कैसे सिद्ध होता है? इन प्रश्नों के सच्चे वा सही उत्तर मनुष्य को जीवन की सही दिशा प्रदान करते हैं। शर्त यह है कि मनुष्य अधिकारी हो और उसे देव प्रभाव उचित मात्रा में मिलते रहें। देवात्मा की देव वाणी सुनाई कि "हे मनुष्य तूं केवल शरीर नहीं, तू आत्मा भी है। केवल शारीरिक सुखों की तृप्ति में उमर बर्बाद न कर" यह वाणी अधिकारी आत्माओं को प्रेरित कर सकती है।

हमें यह प्रश्न करना चाहिए कि हमें कौन चलाता है? इसका सही उत्तर इन्सान को पता नहीं।

"ज़िन्दगी का साज़ भी अजब साज़ है,
बज तो रहा है, मगर बेआवाज़ है।"

उपरोक्त सतरें यहीं संकेत करती हैं कि मनुष्य को अपनी परिचालक शक्तियों का ज्ञान नहीं। अपनी परिचालक शक्तियों को जानने के लिए रूहानी रोशनी की आवश्यकता है। धन अनुराग, काम अनुराग, मोह बन्धन, अहं अनुराग, मान-प्रशंसा-बड़ाई अनुराग, स्वार्थ अनुराग, स्वाद अनुराग आदि की भीषण शक्तियां सब मनुष्यों में कम वा अधिक मात्रा में वर्तमान है। इन शक्तियों का कुछ न कुछ बोध देव प्रभाव दायक संगत में होता है। इसके उदाहरण प्रस्तुत किए। यह सब उपरोक्त सुख अनुराग की शक्तियां आत्मिक रोग हैं, जो आत्मा शक्ति का क्षीण करते है। इनको जानना और घटाना ही आत्मिक बोध की ओर ले जाता है। इस विषय को उदाहरणों सहित स्पष्ट किया। इस गूढ़ विषय को बहुत सरल बनाकर सभापति जी ने प्रस्तुत किया।

दूसरी सभा, 11.00 बजे :- इसका विषय था स्व-अस्तित्व के सम्बन्ध में पूजनीय भगवान के आदेशों का पाठ और व्याख्या। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने पूजनीय देवशास्त्र खण्ड 4 में से आदेशों का पाठ करके व्याख्या की। उन्होंने बताया कि मनुष्य का अस्तित्व विश्व के सब भागों से जुड़ा होने के कारण परिवर्तन के नियम के अधीन है। मनुष्य जीवन का लक्ष्य हर प्रकार की नीच गतियों से मोक्ष पाना है और उच्च भावों को पैदा करना है।

तीसरी सभा:- यह सभा 4.30 बजे हुई, इसके परिचालक श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान थे। इस सभा का विषय था भगवान देवात्मा के प्रभावों का आद्वितीय कारज। सभापति जी ने बताया कि इस विशेष समाज में आने से पहले मैं जीवन के विचार से पूर्ण अन्धकार में था। पूजा, पाठ, साधना आदि करके अपने आपको धर्मवान समझता था। शराब, मांस, रिश्वत अर्थात किसी बुराई से न केवल घृणा नहीं थी बल्कि उन्हें ठीक समझता था। गुरू महाराज के देव प्रभावों ने मेरा जीवन बदल दिया। मोटे पापों और मिथ्या से घृणा हो गई। रिश्वत छोड़कर लोगों की सेवा में सुख मिलने लगा। कोई कठिन परिस्थितियों में भी समाज के लिए लाखों रूपये दान करने के योग्य बन गया। लोगों का खून पीने वाले जन को इन प्रभावों ने सेवा वा परोपकार के योग्य बना दिया।

8 सितम्बर सुबह 8.30 बजे :- इस सभा का विषय था भगवान देवात्मा का नीच जीवन मिटाने और उच्च जीवन प्रदान करने का अनोखा कारज। इस सभा में सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह

जी थे। उन्होंने पहले बताया कि अनोखा कारज क्या होता है?

जैसे कहा जाता है कि एक सरोवर में पिंगले ने स्नान किया और वह तन्दरुस्त हो गया, इसी प्रकार विश्वास बनाए हुए हैं कि किसी के धूने वा आशीर्वाद से कोढ़ी ठीक हो जाते हैं, यह बातें नेचर के अटल नियम के विरुद्ध हैं, इसलिए मिथ्या है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा के देव प्रभावों में जो जन आए हैं, उनके जीवनों के परिवर्तन के करिश्में हुए हैं। अनपढ़ जनों की भी जैसे श्रीमान बुद्ध सिंह जी, श्रीमान रामसिंह जी, श्रीमान गुरुबख़्श जी आदि की मान्सिक और हार्दिक शक्तियां इतनी विकसित हो गई कि बड़े-2 विद्वान उनका मुकाबला नहीं कर सकते थे। किस प्रकार एक-2 काम वासना का शैदाई पवित्र बनने के मार्ग पर पड़ गया। बेईमान सराफों को ईमानदारी बना दिया। कृतघ्न बेटों को शुक्रगुज़ार बना दिया। जहां सम्बन्धों में यह प्रभाव पहुँचते है, तो वह सम्बन्ध हितकर बन जाते हैं। घरों में कैसा स्वर्ग आता है। सभापति जी ने बहुत प्रभावदायक ढंग से गुरू महाराज के अनोखे कारज का वर्णन किया।

दूसरी सभा :- श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई, बताया कि हमारे शुभ के लिए जो गुरु महराज की तड़प है, उसको हम अंश भर भी अनुभव नहीं कर सकते। उल्टा मनुष्यों ने उनको असहाय कष्ट दिए हैं, तड़पाया है। मुकदमें हुए, गोलियां चलाई परन्तु उन्होंने अपने परम लक्ष्य की सिद्धि के लिए अपना सब कुछ वार दिया, फिर धन और जन की अपील की गई। बहुत अच्छी मात्रा में दान हुआ। कुल 38000/- दान इकट्ठा हुआ उसके बाद भाव प्रकाश की सभा हुई।

भाव प्रकाश

मोहन लाल :- मै यहाँ सभाओं में काफी समय के बाद शामिल हुआ हूँ। सभाओं में बहुत अच्छा फील होता रहा। इतना समय सभाओं में न आने का भी महसूस होता रहा। अनजाने में ही गुरु महाराज के जो प्रभाव हृदय पे पड़ गये उनसे अब तक बहुत भला हुआ है। पहले यह आदत होती थी कि किसी भी जानकारी अथवा रिश्तेदार के घर जाता था तो वहाँ जाकर उनके यहाँ जबरदस्ती मेहमान बनकर खान-पान बनवाता व खाता था। किसी की तकलीफ या अपना उनपर बोझ बनना महसूस नहीं होता था। दूसरों से सेवा पाना अपना हक समझता था। अब काफी अरसे से उच्च प्रभावों से इस गति में बदलाव आया है। अब किसी भी बहन, बेटी अथवा किसी जानकार या रिश्तेदार से सेवा पाकर महसूस करता हूँ, गुरु के प्रभावों से अब किसी के घर या तो खाली हाथ जाता नहीं, या कुछ फल आदि ले जाता हूँ या उनकी सेवा के बदले बड़ी खुशी व दिल से कुछ यथा योग्य नगदी भेंट देकर तृप्ति पाता हूँ।

गुरु के प्रभावों से कुछ बुराईयों व कई प्रकार के नशों से बचने में मज़बूती भी आयी है। हालांकि अपने जीवन को मैं पूर्ण साफ और सुरक्षित महसूस नहीं करता हूँ परन्तु गुरु दर से दूर होकर तो घाटा ही घाटा है।

गुरु के उच्च असरों से ईमानदारी के भाव को भी बल मिला है, जिससे मेरा व्यवहार काफी हद तक औरों के मुकाबले साफ व सच्चा देखता हूँ जिसके कारण मैं जहाँ काम करता हूँ, वहाँ कई जिम्मेवारियाँ मेरे अच्छे व्यवहार को देखकर मुझे सौंप देते थे। मेरी सर्विस में हिसाब आदि करने में भी मालिक मेरे ऊपर और साथी कर्मचारियों के मुकाबले ज्यादा विश्वास

करते रहे हैं जबकि मेरे साथियों को मैं मालिक के साथ कई बार झूठ व बेईमानी आदि के व्यवहार के कारण उन्हें उनका दण्ड भुगतते भी देखता।

गुरु दर पर आकर जहाँ पायी हुई बरकतों से दिल बहुत धन्यवाद के भावों से भर रहा था वहां सभाओं के उच्च असरों में अपनी एक बेईमानी की घटना उभर उभर कर सामने आयी। मैं जहाँ काम कर रहा था और मेरे कुछ अच्छे व्यवहार के कारण वह मुझ पर इतना विश्वास करते थे, वहीं अपनी नालायकी से अपने साथियों के साथ रहते-रहते उनके प्रभाव में आकर अपने उपकारी, रोजी रोटी देने वाले मालिक से मैंने झूठ माकर एक रकम करीब 250/- रू की ज्यादा लिख ली, उन्होंने सदा की भांति मुझ पर भरोसा जताया व मुझे पैसे दे दिए। सभाओं में बैठकर जहाँ और सौभाग्यवान जन देव ज्योति को पाकर अपनी गलतियों के लिए रो-रोकर माफी माँग रहे थे वहाँ मुझे भी अपना अपने मालिक के सम्बन्ध में विश्वासघाती रूप नज़र आकर बहुत शर्म और दुख फील हो रहा था। वहीं प्रभावों में बैठे-2 मैंने यह प्रण किया कि मैं अपने उसी उपकारी मालिक के पास जाकर (हालांकि वह करीब 250-300 किलोमीटर दूर शहर में रहते हैं) उन्हें वह बेईमानी से लिए रूपये लौटाऊँगा व माफी भी मागूँगा।

श्रीमान किशन सिंह जी चौहान :- मुझे इस विशेष सत्संग में 4 सितम्बर से शामिल होने से बहुत खुशी प्राप्त हुई। मेरा बहुत भला हुआ है। और भी भला करने का यत्न करूंगा। मेरी बेनती है कि अधिक से अधिक जन श्री अकबरपुर पहुँचे। मैं अपने भले के लिए प्रचार गाईड पढ़ूँगा। मैं अपना निज का साधन भी बढ़ाऊंगा।

श्रीमान जगीर सिंह जी :- मै श्रीमान सुखदेव सिंह जी का धन्यावाद करता हूँ, इन्होंने इस दर से जोड़कर मेरा बहुत भला किया है। इन सभाओं में अपने बहुत सारे पाप सामने आए है, जो पारिवारिक जनों पर किए, जो जानवरों और पशुओं को सताया, वह सब सामने आकर दुःखी करते रहे। यह इच्छा पैदा होती रही कि आप बचना है और दूसरों को बचाने में सहायक होना है। श्रीमान जी के प्रति इसलिए घृणा होती रही कि ये परमात्मा को नहीं मानते, उनके छुरा मारने को दिल करता था। इन्होंने गुरु के प्रभाव डालकर मुझे बचाया है। नशे और मोटी बुराईयां तो छूट गई अब नीच घृणा से बचना है।

श्रीमान सुभाष जी शर्मा :- मेरे सौभाग्य हैं कि मैं इस संस्था से जुड़ा हूं। श्री चौहान जी की कृपा से यहां आया हूँ। मेरी बहन की सेहत ठीक नहीं थी, दवाई खाकर भी मेरे साथ आई है। मेरे पर इनके बड़े उपकार हैं बिल्कुल मां जैसी लगती हैं। अब मेरे भीतर अपनी मासी वा भाई की सेवा का भाव पैदा हुआ है। बहनों के लिए सत्कार पैदा हुआ है, इन्होंने कभी मुझे गोबर उठाने नहीं दिया। इनके उपकारों को देखता हूँ और ग़ल्तियों के लिए इनसे क्षमा चाहता हूं।

श्रीमान ओम प्रकाश जी खुराना (लुधियाना) :- मेरा पहला जीवन बहुत घटिया था। मैंने बहुत नशे वा बीड़ी सिगरेट पी है। माता पिता की कोई सेवा नहीं की। जूए में पैसे बर्बाद किए हैं। मेरी बहुत सी ग़ल्तियों का तो परिशोध नहीं हो सकता। मैं हंटरों से मारने के योग्य हूँ। मैं अपनी धर्म पत्नी से भी क्षमा मांगता हूँ, मैं इनका भी गुनाहगार हूं।

निशि शर्मा ने एक बहुत सुन्दर भजन का गान किया। एक गीत रमेश जी ने गाया।

बीबी अशोका जी (अम्बाला) मुझे जीवन का कुछ पता नहीं था। यहां आकर पता लगा है कि नीच घृणा को यदि काले नाग की तरह जहरीला नहीं देखूंगी तो मैं बच नहीं सकती।

श्रीमति सुदेश जी खुराना (लुधियाना) यहां का वातावरण बहुत अच्छा लगा। हमारे घर में नर्क था। हम अपना भला करने का बल मांगते हैं। बहुत सत्कार और सेवा पाई है। भगवान की महिमा कुछ नज़र आई है।

श्रीमति भजनी जी :– पांच साल से स्वर्ग में रह रहे हैं। अपने भाई, अपनी सास और माता का धन्यवाद करती हूँ। मुझे इतना सौभाग्य मिल जाए कि मैं धर्म सम्बन्धियों का खाना बना सकूं और अपना भला कर सकूं। दीन भावी होकर और हाथ जोड़कर धन्यवाद करती हूं।

गोपाल कृष्ण जी:– मैं समाज में आना अपना सौभाग्य मानता हूँ। यहाँ प्रोग्राम में शामिल होकर ऐसा फील कर रहा हूँ जैसे कि यहाँ देव गंगा बह रही है। ऐसे प्रोग्राम में शामिल होने पर अपने से बड़े व उच्च धर्म सम्बन्धियों के बीच रहने का, उन्हें देखने का मौका मिलता है। हालांकि एक तरफ ऐसा माहौल पाकर दिल को तृप्ति मिलती है परन्तु दूसरी तरफ अपनी नालायकी व नीचताएँ भी दिखती हैं। अभी कुछ समय पहले देवशास्त्र तीसरे खण्ड का अध्ययन करने का मौका मिला उसमें जैसे जैसे पढ़ता गया, यह महसूस होता था कि गुरु महाराज के पैमाने के अनुसार ऐसा कोई रोग नहीं जो मुझमें न हो। (काफी दुखी हृदय से.....) यूँ अपने आपको मैं बहुत बढ़िया व साफ देखता हूँ परन्तु जब जब गुरु के प्रभाव मिलते हैं अपनी नीचता व धृष्टता नज़र आती है। यहाँ आकर जब कोई सेवा के काम में लगा होता हूँ तो दूसरे जन जब प्रशंसा करते हैं, तो घमण्ड तृप्ति पाता है व अपने आपको कुछ का कुछ समझने लग जाता हूँ लेकिन मेरी प्रकृति तो इतनी घटिया है कि जिनसे सेवाएँ पाता हूँ उनका भी कोई मोल नहीं लगाता। बड़े श्रीमान जी के घर करीब एक साल से ऊपर हो गया, रह रहा हूँ श्रीमान जी मुझे जब मेरी गल्तियों के लिए अपने दु:ख से मुझे कहते हैं तो मैंने इन्हें कहा कि आप मुझे प्यार से समझाएंगें तो मै समझ जाऊँगा नहीं तो मेरे अन्दर उथल पुथल पैदा हो जाती है और मै घृणा करने लग जाता हूँ। सब सेवाएँ पाने के बावजूद अपनी और से आंटी जी जब मुझे और भी खाने पीने का पूछते रहते हैं तो मैं तसल्ली में था परन्तु जब एक दो बार उन्होंने नहीं पूछा तो मैंने अपने अन्दर दूरी बनाकर उसका जिक्र भी किया जिस हालत से मैं बाद में बड़ी मुश्किल से निकला। ऐसी नीचताएँ गुरु के द्वार पर आने से दिखती हैं यह भी इस देव गंगा का ही फल है। यहाँ प्रोग्राम में आकर जो उच्च धर्म सम्बन्धियों को देखता हूँ तो उनके आगे झुकता हूँ, श्रीमान चौहान साहब जैसे हर समय सक्रिय रहते हैं यह दूसरों को सैर, व्यायाम आदि करने के लिए जोर लगाते हैं, सुबह साध न करवाने के लिए घंटा भी बजाया। श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बातों बातों में अपने बारे में बताया कि उन्होंने अपनी जिन्दगी में नौकरी के अलावा पैसे कमाने के लिए कभी किसी बच्चे को नहीं पढ़ाया, न टयूशन ली, न पैसे की खातिर और किसी गतिविधि में भाग लिया। काश ऐसे उच्च गुणों वाले धर्म सम्बन्धियों की कद्र कर सकूँ व अपनी नीचता व अबोधताओं को देखने के योग्य हो सकूँ।

इसके बाद माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी ने कहा कि गुरू महाराज वा नेचर की सहायकारी शक्तियों और परलोक वासी उच्च आत्माओं की सहायता से यह उत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। हम अपनी अपनी योगयताओं के अनुसार लाभ उठा सके हैं। भजन गाने में श्रीमान जगदीष जी, श्रीमान चन्द्रगुप्त जी, बीबी सुदेश खुराना जी, निशि (श्री अकबरपुर) ने बहुत सराहनीय योगदान दिया है। सबका बहुत 2 ध न्यवाद।

फिर देव भारती गाकर और जय ध्वनि के साथ यह प्रोग्राम समाप्त हुआ।

आपकी ज्योति मुझे अपना असल रूप दिखाती है

(श्रद्धेय श्रीमान कनल जी)

मेरे पूजनीय सतगुरू!

मैं जीवन व्यतीत करता था, परन्तु मैं जीवन की फिलासफी, आत्मिक शक्तियों का महत्त्व, तथा नीच प्रकृति की बेलगाम ताकतों-जिन्हें मैंने अपने अन्दर बढ़ा लिया था, और जो मुझे जंगली पशु बना रही थीं-के खतरों से अनजान था। पूर्ण स्वार्थी जीवन व्यतीत करने और दुनियां को अपनी नीच रुचियों की तृप्ति का अखाड़ा बनाने की अपनी भयानक छवि मुझे भयभीत नहीं करती थी। मेरी बेलगाम नीच रुचियां मुझे दूसरों के लिए हानिकारक और दुखदायक बनाती थीं। मेरे दूषित विचार मुझे दूसरों के अधिकारों का अपहरण करने की तरफ ले जाते थे। **परन्तु मुझे उनका पता कुछ नहीं था। उन घृणित विचारों और कामों की लड़ी अब अपने असल घृणित रूप में मेरे सामने आ रही है।** आपकी ज्योति ने मुझे अपनी पिछली तस्वीर दिखा दी है और मैं अत्यन्त लज्जित हो रहा हूं। मनुष्य के रूप में जन्म लेकर मैं एक जंगली जानवर का जीवन व्यतीत करता था। अहंकार के अधीन होकर मैं अपने उपकारियों का भी अपमान करता था। मेरे ऊपर ग़लत ताकतों का राज्य था और दूसरों के सम्बन्ध में मैं ग़लत जाता था। मेरा आत्मा खतरनाक, हानिकारक और विषैले फल पैदा करता था। हाय! मेरी कैसी दशा होती, यदि मैं उसी पथ पर चला चलता। परन्तु आपकी ज्योति ने मेरी उद्दण्ड नीच प्रकृति का हानिकारक रूप मुझे दिखाया है और कम से कम कुछ पतनकारी रुचियों से मेरे भीतर घृणा पैदा कर दी है। मैं उनसे बच गया हूं। मुझे उनके भयानक नतीजों से बचा लिया गया है। अब मैं आपको ज्योति स्त्रोत जान कर पथ प्रदर्शन प्राप्त करने के लिए आपके चरणों की ओर दौड़ता हूं। आपने एक सीमा तक मेरे भीतर सच्ची सहानुभूति, सच्ची बन्धुता, सच्चा सेवाभाव और उच्च संगत की भूख पैदा की है। मैं बुरी संगत-चाहे वह इस दुनियां के बड़े से बड़े लोगों की भी क्यों न हो-के भयानक फलों को देखने के योग्य हो गया हूं। मैं उनसे परे रहता हूं। मैं प्रतिदिन आपके दर तक पहुंचता हूं और वह बरकतें पाता हूं जिनका मैं वर्णन नहीं कर सकता। वह आनन्द और स्वर्गीय सुख अनुभव करने की वस्तु है, बयान करने की नहीं। मेरा जीवन एक सीमा तक सुन्दर बन गया है। आपने इसे हितकर बना दिया है। काश! मेरा दिल सदा श्रद्धा से आपके चरणों में झुका रहे।

जीवन पथ कुछ और है, विद्या बुद्धि और

मेरे भगवान्!

यद्यपि मैंने एक भारतीय विश्वविद्यालय की सर्वोच्च शिक्षा प्राप्त की थी और उस विश्वविद्यालय की दर्शन (फिलासफी) और मनोविज्ञान की सबसे ऊंची परीक्षा पास की थी, फिर भी मैं अन्धकार में भटक रहा था। मुझे ज्ञान नहीं था कि मेरा आत्मा गठन प्राप्त जीवनी शक्ति है और विकास, पतन और मौत के नियमों के अधीन है।

मैंने कालेज में नैतिक फ़िलासफ़ी (Moral Philosophy) विषय लिया, परन्तु यह सारा ज्ञान मुझे अपने आत्मिक रोगों का और मनोविज्ञान मुझे जीवन की नीच और हानिकारक गतियों और उनके भयानक फलों को न दिखा सके। मैं वही हानिकारक जीवन व्यतीत करता था, उसके बढ़ जाने पर दुखी भी होता, परन्तु मैं उसके विषय में अज्ञानी था। जब आपकी

सर्वोच्च ज्योति मेरे आत्मा में प्रविष्ट हुई तो मैंने वह ज्ञान प्राप्त किया जो मेरे लिए एक महान वरदान सिद्ध हो रहा है। मैंने अपनी रुचियों के असल रूप को देखा है और मैं न केवल अपने आपको किन्तु दूसरों को भी उनके भयानक फलों से बचाने के योग्य बन रहा हूं।

हे मेरे पूजनीय सत्गुरू! तब मैं आपको किन शब्दों में धन्यवाद दूं? मैं दिल की गहराई से यह कामना करता हूं कि आप हमारे सिरों पर देर तक विराजमान रहें।

आपकी ज्योति हमें होश की अवस्था में रखती है

मेरे पूजनीय सत्गुरू!

आपकी ज्योति महा अमूल्य है, क्योंकि वह मनुष्य को होश की अवस्था में लाती है। मनुष्य आत्मा जो नीच रुचियों और नीच अनुरागों तथा अहंकार की विकृत शक्तियों के अधीन हैं, अपना बहुत सा समय धोखे में गुज़ारते हैं। ऐसी अवस्था में वह होश जिसमें सच्चाईयां अपने असल रूप में दिखाई देती हैं, सम्भव नहीं है। अपनी ज़ात को ऊंचा समझना, जबकि वास्तव में बात इसके उलट होती है, निपट पागलपन है। विवाह, मृत्यु तथा अन्य अवसरों पर अपने घमंड को तृप्त करने के लिए हज़ारों रुपए खर्च करना और भले काम के लिए दान देते समय दिल में दुख महसूस करना, पागलपन के सिवाए कुछ नहीं। केवल धन की खातिर धन इकटठा करना और इसी को जीवन का लक्ष्य बनाना पागलपन है। अपने बच्चों को आसमान से उतरे हुए और दूसरों के बच्चों को उनसे घटिया समझना, चाहे सच्चाई उसके उलट ही हो, धोखा और पागलपन है। अपने अनाधिकारी बालिग बच्चों के लिए धन छोड़ जाने के लिए धन एकत्र करना, जबकि वह बच्चे अपने पावों पर खड़े होने के योग्य हों, और एक हितकर समाज या मनुष्य मात्र की भलाई की परवाह न करना, जबकि उनका नैतिक हक अधिक हो, पागलपन और उलटी दृष्टि है। मिथ्या विश्वासों को निजी वस्तु समझ कर उनके साथ चिपके रहना और दलील, परीक्षा या तजरबे की अपील को परे फैंकना, एक धोखा और पागलपन की बात है। इसी प्रकार अन्य उदाहरण दिए जा सकते हैं।

भगवन्! मैं देखता हूं कि लाखों मनुष्य धोखे में ही जीवन व्यतीत करते हैं। वह असलियत से परे जीवन व्यतीत करते हैं और इसी अवस्था में मर जाते हैं। जिन्हें आपके श्री चरणों में आने और आपके देव ज्योति और देव तेज सम्पन्न देव प्रभावों को पाने का अधिकार मिलता है, वह जानते हैं कि आपके श्री चरणों में रहना कैसा सौभाग्य है। आपकी ज्योति के प्रकाश में यह धोखे दूर होने आरम्भ होते हैं। नीच रुचियां और नीच अनुराग तथा अंह सम्बन्धी शक्तियां, जो बढ़ते बढ़ते आत्मा के रोग बन गए हैं, उन उच्च शक्तियों से नष्ट होने लगते हैं कि जो उच्च शक्तियां आप अधिकारी मनुष्यों में पैदा करते हैं यही कारण है कि जब तक यह होश की अवस्था कायम रहती है, आपके तुच्छ सेवक आपकी महिमा के गीत गाते नहीं थकते। उनके इर्द गिर्द के लोग उन्हें पहले से पूर्णत: भिन्न और आदर के योग्य देखने लगते हैं।

मैंने भी आपके चरणों में बहुत लाभ उठाया है। आपने कुछ सम्बन्धों में मुझे होश की हालत में आने के योग्य बनाया है। इससे आगे आपने मुझे अपने उन नीच भावों को देखने के योग्य बनाया है, जो धोखे पैदा करते हैं और अब मैं जानता हूं कि मेरी अपनी शक्तियों पर यह भरोसा नहीं किया जा सकता कि वह मुझे ठीक मार्ग पर ले जाएंगी।

सन्तान अनुराग का बोध

मैं आपकी रोशनी में प्राय: प्रतिदिन इन दो विषयों पर विचार करता रहा हूं :-

(क) काम अनुराग मूलक नीच बन्धन

(ख) सन्तान अनुराग मूलक नीच मोह बन्धन आदि।

सन्तान अनुराग के सम्बन्ध में मुझे जो कुछ अनुभव होता रहा है, वह यह है:-

(१) इस अनुराग से परिचालित होकर मैं अपने बच्चों के स्थूल शरीर को प्यार करता हूं। यह मुझे उनके आत्माओं की सम्भाल और रक्षा की ओर ले जाने की योग्यता नहीं रखता। इसलिए मैं अस्थिर और असार धरती पर चलता हूं: क्योंकि एक तो उनके आत्मिक हित की ओर से अन्धा होकर मैं उनका उच्च कोटि का उपकारी नहीं बन सकता, दूसरे मैं उस वस्तु, अर्थात उनके स्थूल शरीर को जिसे, सदा के लिए इस संसार में रखना असम्भव है, प्यार करता हूं। अत: मैं अपनी जिन्दगी रेत पर खड़ी करता हूं, और जब मुसीबतें आती हैं- कि जो अवश्य आती हैं-रेत की नींव खिसक जाती है, तब मानो मेरा सब कुछ लुट जाता है। यह अवस्था कैसी भयानक और कितनी शोचनीय!

(२) मुझे केवल उनके स्थूल शरीर ही दिखाई देते हैं। उनकी शारीरिक आवश्यकताएं या शारीरिक सुखों का अभाव जितना मुझे बेचैन करता है, उतना बेचैन मुझे उनकी आत्मिक आवश्यकताएं नहीं करतीं। इससे मेरा बहुत अनिष्ट हो सकता है जैसा कि उन अनेक जनों का हुआ है जो अपने बच्चों के लिए रुपया छोड़ जाने या उनके शरीरों के लिए सुख स्वाद के सामान जुटाने और उन्हें मानसिक शिक्षा देने के लिए उच्च वातावरण को छोड़ गए हैं और अपने बच्चों को भी उससे बाहर ले गए हैं। मुझे पता है कि कुछ अवस्थाओं में माता पिता की गलती के कारण बच्चे देव समाज को ही छोड़ गए हैं।

(३) यदि यह सन्तान का अनुचित प्यार बहुत बढ़ जाए, तो यह मुझे उच्च जीवन और पर-सेवा से दूर ले जाएगा और मेरा बहुत सा कार्यगत समय स्वार्थ पूर्ति में व्यतीत होगा और मैं खुशी खुशी नीच वस्तु के लिए श्रेष्ठ वस्तु की कुर्बानी दूंगा।

(४) यह मुझे अन्यायकारी (unjust) और अनुदार (unfair) बनाता है।

(५) इसके अधीन रह कर मुझे अपने बच्चों के तो पहाड़ जैसे दोष भी राई जितने दिखाई देते हैं और दूसरों के छोटे दोष भी पहाड़ जितने लगते हैं। इस प्रकार मेरी देखने की ताकत पर परदा छा जाता है।

(६) सन्तान का प्यार नीच आत्माओं को मेरा मालिक बनाता है जो कि एक भयानक स्थिति है।

(७) जितने अंश यह मोह बलवान होता है, उतने ही अंश आपके साथ मेरा सम्बन्ध कमज़ोर होता है। मैं इसे अपना बड़ा दुर्भाग्य समझता हूं।

(८) मेरा उच्च जीवन और विकास खतरे में पड़ जाता है।

मैं अब इस अंग में अपने आपको अधिक रोशनी में पाता हूं। और अभी कई महीने और कई वर्ष मैं इस पर चिन्तन करूंगा। सम्भव है, आपकी शक्ति पाकर मैं इन नीच अनुरागों से ऊपर हो सकूं।

देव ज्योति में ही हमें अपनी उल्टी दृष्टि का बोध होता है

मेरे भगवन्!

कुछ समय से मैं प्राय: प्रतिदिन अपने निज के साधन में 'मनुष्यात्मा के संबंध तत्त्व' नामक अति मूल्यवान पुस्तक का पाठ करता हूं। मैंने उस अध्याय का बार बार पाठ किया है जिसमें नीच अनुरागों और

नीच घृणाओं से उत्पन्न महा भयानक फलों का वर्णन है। इनमें से एक है आत्मा की उल्टी दृष्टि। यह फल उतना ही सच है जितना कि यह भयानक है। इस प्रकार के कुछ तजरुबे मैं अपने और दूसरों के जीवनों से नीचे लिखता हूं-

१. माता के सम्बन्ध में उल्टी दृष्टि

मेरी बहुत छोटी सी आयु में मेरे पिता जी का देहांत हो गया था। मेरी माता जी ने हमें पालने में बहुत संग्राम किया। आपकी अद्वितीय रोशनी प्राप्त करने से पहले मेरे दिल में विषैला विचार उठता था। वह यह था कि जब मैं अपने कमाए हुए पैसों से उनकी सहायता करता, तो मैं यह समझा करता कि मैं माता पर एहसान कर रहा हूं। आपकी रोशनी में मैं अनुभव करता हूं कि यह भाव कितना ग़लत था। मैं माता के ऋण को अपनी तुच्छ सी सेवाओं से कैसे उतार सकता था? उन पर कोई मेहरबानी करने का तो प्रश्न ही उत्पन्न नही होता था। मुझे आपने एक भयानक उलटी दृष्टि से बचा लिया।

जब मैं दसवीं कक्षा में पढ़ता था तो मेरी माननीय माता जी को किसी दूर के स्थान में एक भारी बंडल ले जाना था। उन्होंने मुझे ऐसा करने के लिए कहा। बंडल उनके लिए बहुत भारी था और हमें अन्य कोई सहायता प्राप्त नहीं थी, इसलिए वह मुझे ले जाना पड़ा। लेकिन सारे रास्ते में उनके प्रति कठोर शब्द बोलता रहा और बुड़बड़ाता रहा। इसका कारण यह नहीं था कि मैं बंडल उठा नहीं सकता था। इसका कारण तो यह था कि मैं समझता था कि मैं ऐसा काम करके लोगों की नज़रों में छोटा हो जाऊंगा। यह मेरी शोचनीय उल्टी दृष्टि थी। आपकी रोशनी से वंचित होने के कारण मैं नहीं देख सका कि मेरी माता को मदद की जरूरत है, वह माता जिसने मेरी इतनी बड़ी सेवा की है। मैं इस धोखे में रहता था कि सारे संसार की आंखे मेरी ओर लगी हुई हैं, मानों दुनियां को अन्य कोई काम नहीं और यह मान भी लिया जाए कि लोग मेरी कल्पना के अनुसार ही सोचते होंगे, तो भी मैं कोई पाप नहीं कर रहा था। हाय! मेरी कैसी भयानक अवस्था कि मैं नीच दुनियादारों की ओर से कुछ प्रशंसा के खोखले शब्द न मिलने के डर से अपनी माता की भी सहायता न करूं।

२. अध्यापकों के सम्बन्ध में उल्टी दृष्टि

जिस संगत में मैं रहता था, उसने मुझे यह दिखाया कि अध्यापकों का अपमान करना एक अच्छी बात है। जब मैं कालेज में गया, तो मुझे बताया गया कि कालेज का विद्यार्थी तो एक स्वतंत्र पक्षी है और उसे अधिकार है कि जो प्रोफेसर उसकी आज़ादी में दख़ल दे, उसे उसका मजा चखाए। मेरे भीतर यह विश्वास भरा गया कि जमात में प्रोफेसर की हंसी उड़ाना या उसकी पीठ पीछे उसका मखौल उड़ाना एक आज़ाद कालिजिएट की निशानी है। अपने दिनों में मैंने भी कुछ अध्यापकों का अपमान किया, उनकी आज्ञा के विरुद्ध हरकतें की और प्रोफेसरों का मखौल उड़ाने में दूसरों का साथ दिया। अब यह सारी अवस्था मुझे एक भयानक उल्टी दृष्टि मालूम होती है।

आपकी देव ज्योति पाने के बाद कालेज में ही मेरा व्यवहार बदल गया। परन्तु बीते जीवन के दुखदाई धब्बे मेरी आत्मा पर वर्तमान हैं और मैं उन दिनों को याद करके रोता हूं जब मैं ऐसे विषाक्त प्रभावों से घिरा हुआ था। आपकी ही देव ज्योति में मुझे दिखाई दिया कि मेरे अध्यापक मेरे उपकारी थे। कालेज के दिनों में जब मुझे आपकी शरण मिल चुकी थी तो जिन अध्यापकों का मैंने उनके सम्बन्ध में अपनी नीच गतियों का अपने उस समय की योग्यता के अनुसार यथा समर्थ्य परिशोध किया। अध्यापक दंग रह गए और

उन्होंने मुझसे पूछा कि तुम्हारे अन्दर यह आश्चर्यजनक परिवर्तन कैसे आ गया? मैंने उन्हें देव समाज के द्वारा अपने जीवन में आए परिवर्तन की कथा सुनाई।

३. आत्मिक उपकारी के संबंध में दुश्चिन्ताएं

जब मेरे अंहकार के नीच अनुराग पर चोट लगती है तो मेरी निगाह उल्टी हो जाती है। मुझे श्री भाई मोहन देव जी के सम्बन्ध में एक घटना याद है। यह बम्बई की और 1905 ई. की बात है, जबकि मैं कालेज के वातावरण से विषाक्त था। मैं क्षुद्र प्रकार की बातें करने लगा। उन्हें इससे दुख हुआ और तनिक कड़े शब्दों में मुझे समझाया। इस पर मै उल्ट पुलट हो गया। कम से कम उस समय के लिए उनके सब उपकार मैं भूल गया और मैं उनके सम्बन्ध में दुश्चिन्ताएं करने लगा। कैसी भयानक उल्टी दृष्टि! वह मेरे महान उपकारियों में से एक थे, जिन्होंने मुझे उस समय समझाया जब मैं ग़ल्त जा रहा था, परन्तु मैंने उन्हें उस समय मेरे साथ बहुत बड़ा अन्याय करने वाला अनुभव किया।

४. अपने दोषों को मानने के सम्बन्ध में उल्टे विश्वास

जब मैं अपनी पुरानी बिरादरी और पुराने सम्बन्धियों और सोसाइटी के वातावरण में सांस लेता था, तो एक और विषैली धारणा मेरे दिल में प्रवेश कर गई थी, जिसने अब तक भी मेरे दिमाग से अपना अधिकार पूर्ण रूप से नहीं छोड़ा। वह उल्टी धारणा यह थी कि जो मनुष्य जीवन में सफल होना चाहता है, उसे अपने आप को दुनिया के सामने ठीक ठाक प्रगट करना चाहिए, चाहे उसके आत्मा को विनाश के कीड़े खा रहे हों। जीवन का मंत्र यह बना हुआ था, "जो मन में आए करो, परन्तु कानून की पकड़ में आने से सावधान रहो।" आपकी ज्योति में यह विश्वास कितना भयानक प्रतीत होता है। आपकी ज्योति दिखाती है कि चाहे मुझे कोई न भी देखे, तो भी मेरा आत्मा प्रत्येक नीच भाव, विचार, और कार्य से नीच बनता है, और सोसाइटी में मुझे केवल उसी स्थान या पद की इच्छा करनी चाहिए जिसका मैं अधिकारी हूं। ऐसे मान यश की भूख नहीं रखनी चाहिए जिसका कि मैं अधिकारी नहीं।

उपरोक्त दूषित प्रभावों ने जो मैंने पुरानी सोसाइटी से प्राप्त किए, मुझे लम्बे काल तक अपने दोषों को देखने, और देखने पर उन्हें मान लेने के अयोग्य बनाए रखा। उन्होंने मेरे भीतर झूठी प्रशंसा और बड़ाई की लालसा भी पैदा कर दी, चाहे मैं उसका अधि कारी न भी हूं। कैसी उल्टी दृष्टि!

शेष अगले अंक में

शोक समाचार

बहुत शोक कि हमारे प्रिय धर्म सम्बन्धी श्रीमान बेनी प्रसाद जी पँचकूला का हाल ही में 8 सितम्बर 2019 को देहान्त हो गया है वह 87 वर्ष के थे। उनके सम्बन्ध में दाह संस्कार श्रीमान धर्म सिंह जी चौहान ने देव समाज विधि अनुसार कराया और उनके सम्बन्ध में शुभ कामना सम्बन्धी सभाएं भी उनके घर पर करवा रहे हैं। ऐसे नेक और सेवाकारी धर्म सम्बन्धी का चले जाना क्या परिवार और क्या देवसमाज के लिए बहुत घाटे की चीज़ है। हम उनके निधन पर गहरे दु:ख और शोक प्रगट करते हैं। परिवारिक जनों के साथ गहरी सहानूभुति और परलोक में उनकी सुरक्षा, सहायता और उनके भले की कामना करते हैं

मंत्री देवसमाज(G)

परलोक व्रत के अवसर पर भगवान देवात्मा के उपदेश के कुछ अंश

(सम्वत 1966 वि. को)

प्रत्येक जीवनधारी रात दिन जीने के लिए संग्राम करता है। उसका जीना उसकी जीवनी शक्ति के अस्तित्व पर निर्भर करता है। यदि उसकी यह जीवनी शक्ति विनष्ट हो जाय, तो फिर उसका न कोई व्यक्तिगत अस्तित्व रहता है, और न कोई जीवन।

जिस वृक्ष को तुम आज जीवित देखते हो, जिसमें कोंपले फूटती हैं, नरम नरम पत्ते निकलते हैं, कलियां बनती हैं, फूल खिलते हैं, अथवा इससे भी बढ़कर फल लगते हैं, उस वृक्ष में यह सब लक्षण उसी समय तक प्रकाशित होते हैं, जब तक उसके भीतर उसकी जीवनी शक्ति विद्यमान रहती है। परन्तु जब उसकी जीवनी शक्ति उसे त्याग करती है, अथवा वह नष्ट हो जाती है, तब उस वृक्ष में वह सब लक्षण कुछ भी दिखाई नहीं देते - मानो जीवनी शक्ति के विनाश के साथ ही उसके कार्य के द्वारा जो - जो लक्षण प्रकाश पाते थे, वह सब नष्ट हो जाते हैं। इसलिए प्रत्येक जीवनधारी के अस्तित्व में जीवनी शक्ति ही सार चीज़ है। मनुष्य के अस्तित्व में भी यहीं जीवनी शक्ति (जिसे आत्मा कहते है) सार पदार्थ है।

प्रत्येक जीवन्त अस्तित्व यह चेष्टा करता है, कि वह जीवित रहे, और मर न जाए। मनुष्य की जीवनी शक्ति भी सबसे बढ़कर जो गाढ़ आकांक्षा रखती है, वह यही, कि मैं जीती रहूं, मर न जाऊं; मैं रहूं, मिट न जाऊं। यह आकांक्षा निश्चय स्वाभाविक है। परन्तु किसी जीवनी शक्ति का जीवित रहना वा न रहना उसकी इच्छा पर नहीं, किन्तु प्रकृति के अटल नियमों पर अवलम्बित है। इसीलिए केवल जीने की आकांक्षा रखकर ही कोई मनुष्य अपने आत्मा को विनाश से नहीं बचा सकता, किन्तु उसके निमित्त नेचर ने जो ठीक और अटल पथ रखा है, उसके सत्य ज्ञान और उसे ग्रहण करने की योग्यता लाभ करने पर ही वह अपने अस्तित्व की रक्षा कर सकता है। सारी नेचर में परिवर्तन का जो महा नियम काम कर रहा है, उसके अधीन रहकर किसी अस्तित्व के लिए सम्भव नहीं, कि वह अपने आप को परिवर्तित न करे। उसके लिए बदलना ज़रूरी है - ज़रूरी है, इसीलिए प्रत्येक अस्तित्व बदल रहा है। और बदल कर वह दो सूरतों में से कोई एक सूरत क़बूल करता है, अर्थात् या तो वह पहले से बेहतर हो जाता है या बदतर। या वह पहले से अच्छा बन जाता है वा बुरा। परिवर्तन के इस महा नियम से कोई अस्तित्व अपना पीछा नहीं छुड़ा सकता। इसीलिए **जीवन विषयक नाश और विकास तत्व से बढ़कर मनुष्य के लिए और कोई श्रेष्ट और हितकर नहीं है।** इस ज्ञान की प्रत्येक मनुष्य को आवश्यकता है। इस ज्ञान की तुलना में मनुष्य का और सब ज्ञान और उसकी प्रत्येक विद्या बिलकुल तुच्छ है। जो जन इस ज्ञान से विहीन है, उससे बढ़कर कृपा पात्र और कोई नहीं। तब तुम उस अद्वितीय देवात्मा की अद्वितीय महिमा को उपबल्ध करने की चेष्टा करो, कि जिसने मनुष्य जगत् के विकास क्रम में देव शक्तियों को प्राप्त होकर, उनकी ज्योति में जीवन के विनाश और विकास के सम्बन्ध में वह सत्य ज्ञान लाभ किया है, कि जिसे उससे पहले इस पृथ्वी में किसी और लाभ नहीं किया था। यही वह देवात्मा है, कि जिसके द्वारा यह परम श्रेष्ट ज्ञान किसी न किसी अंश में कुछ और अधिकारी आत्माओं को प्राप्त हुआ है। अधिकारी आत्मा मैंने क्यों कहा? इसलिए कि बिना आवश्यक योग्यता रखने के कोई जन किसी सत्य वा तत्व को **उपलब्ध** नहीं कर सकता। यथा, जो जन जन्म काल से अन्धा उत्पन्न हुआ है, उसके

लिए सुन्दर पदार्थों का ज्ञान जैसे सम्भव नहीं, जिन पशुओं में बुद्धि विषयक कई एक मान्सिक शक्तियां वर्तमान नहीं, वह जैसे लड़कों के किसी स्कूल वा उनकी किसी जमायत के साथ हर रोज़ वर्षों तक बैठकर भी गणित विद्या के नियमों को उपलब्ध नहीं कर सकते; और उनके असल तत्व को नहीं समझ सकते, और कभी भी गणितज्ञ नहीं बन सकते, क्योंकि ऐसा होना ही उनके लिए असम्भव है; वैसे ही अयोग्य जन जीवन विषयक महा तत्वों को उपलबध नहीं कर सकते। यह नहीं, कि गणित विद्या कोई विद्या नहीं, और उसके कोई सच्चे नियम नहीं; किन्तु बुद्धि विषयक कई मान्सिक शक्तियों में रहित होकर किसी पशु के लिए उनके विषय में ज्ञान लाभ करना जैसे असम्भव है, वेसे ही जीवन तत्व विषयक ज्ञान भी केवल उन्हीं को प्राप्त हो सकता है, कि जो उसके तत्वों के देखने और पकड़ने की योग्यता रखते हों, उसके भिन्न और किसी को नहीं।

अनाधिकारी आत्मा जीवन तत्व के विषय में वर्षों तक उपदेश सुन सकते हैं। जिन पुस्तकों में जीवन विषयक तत्व ज्ञान मौजूद हो, उनका वर्षों तक पाठ कर सकते हैं, परन्तु फिर भी वह जीवन विषयक तत्वों को उपलब्ध नहीं कर सकते। वह उनके सम्बन्ध में पहले की न्याईं अज्ञान तिमिर में लिप्त रहते हैं। तब यह जीवन तत्व अथवा आत्म तत्व विषयक सत्य ज्ञान कितना महान है, कितना क़ीमती है, उसका कौन अनुमान कर सकता है? और अधिकारी आत्माओं के लिए उसका दान कितना महान है, कितना श्रेष्ट है, उसका भी कौन अन्दाज़ा लगा सकता है? धन का दान, ज़मीन का दान, घर का दान, विद्या का दान इसके मुकाबले में कोई चीज़ नहीं।

जीवन विषयक ज्ञान हमें बताता है, कि मनुष्य कब से है, और कहां से है। यदि तुम अपने अस्तित्व के सम्बन्ध में इस प्रकार का प्रश्न करो, कि मेरा यह अस्तित्व कब से और कहां से और कब तक के लिए है? तो ऐसा ज्ञानी तुम्हें बता सकता है, कि एक काल था, जबकि तुम्हारे पिता माता तो थे, पर तुम न थे। तुम्हारे पिता माता के भिन्न तुम्हें और किसी ने जन्म नहीं दिया। इन्हीं के अस्तित्व से तुम्हारा अस्तित्व बना है।

मां के शरीर के अन्दर जो थैली बच्चा दान कहलाती है, वह उसकी पहली दुनिया है, कि जिसमें वह जन्म लेता और निर्माणित होता है। इससे पहले वह अपने पृथक अस्तित्व के विचार से कहीं न था। अगर उसके मां बाप अपने दोनों सेल को मिलाकर उसे गर्भास्थान में न पहुंचा देते, तो कोई बच्चा न बनता, और गर्भित सेल की जीवनी शक्ति के विकसित होने से जो नया आत्मा तैयार हुआ, वह भी न होता। प्रकृति के इसी प्रकार के कार्य के द्वारा तुम और हम और मनुष्य जगत के और अस्तित्व तैयार हुए हैं। परन्तु जैसे उस बच्चे को जो गर्भाशय में बन रहा है, उसे गर्भाशय की दुनिया का कुछ पता नहीं होता और उस के निवास स्थान से अलग कोई और लोक है कि जिस में प्रसव होकर वह प्रतिपालित होगा, उसकी भी उसे खबर नहीं होती, और उसके प्रसव होने पर जो स्त्री उसकी मां होकर उसका पालन करेगी अथवा उसके जो पिता वा अन्य जन उसके भावी पालन में भाग लेंगे, उनकी भी कोई सुध नहीं होती; वैसे ही इस पृथ्वी में लाखों मनुष्य अपने आत्मिक जीवन और परलोक सम्बन्धी ज्ञान के विचार से बेसुध पाए जाते हैं। वह यद्यपि परिवर्तन के महा नियम के अधीन रहकर रात दिन बदल रहे हैं, और उनके आत्मा भले वा बुरे रूप को ग्रहण कर रहे हैं, पर उन्हें उसका कुछ पता नहीं। इसी प्रकार पृथ्वी से परे जो-जो सूक्ष्म लोक आत्माओं के निवास के लिए है, उनकी भी उन्हें कोई ख़बर नहीं। यहां की स्थूल देह छोड़ने पर उनके आत्मा का क्या परिणाम होगा, इसका भी उन्हें कुछ ज्ञान नहीं।

वह जीवन विषयक तत्व ज्ञान से शून्य होकर बच्चे दानी के बच्चे की तरह इस पृथ्वी से परे सूक्ष्म लोकों और वहां के निवासियों और वहां पर विद्यमान अपने सम्बन्धियों आदि के विषय में कोई बोध नहीं रखते हैं। बच्चा जिस प्रकार बच्चे दानी में रहकर उसके बाहर की दुनिया का कोई पता नहीं रखता, उसी प्रकार जीवन की फ़िलास्फ़ी से अज्ञानी उन परलोक विषयक सत्य ज्ञान से विहीन होते हैं। परन्तु फिर भी वह सत्य है कि परलोक है, और परलोक विषयक सम्बन्धी भी हैं और उनके साथ हमारा गाढ़ सम्बन्ध भी है।

देखो इस संसार में मृत्यु और परलोक तत्व से अज्ञानी होने के कारण लाखों मनुष्य कितने प्रकार के दुःख भोगते है। एक-एक मनुष्य जो परलोक तत्व से अज्ञानी है, वह अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में कितना भयभीत रहता है। जिस प्रकार जब तक तुम किसी रस्सी को सांप समझते हो, तब तक तुम्हारे भीतर भय उत्पन्न होकर तुम्हें आशंकित और अशान्त रखता है, और जब तक तुम्हें उसका ठीक ज्ञान न हो, तब तक तुम इस भय और अशान्ति से उद्धार नहीं पा सकते; उसी प्रकार जब तक मृत्यु और परलोक विषयक सत्य ज्ञान किसी मनुष्य को प्राप्त न हो, तब तक चाहे वह धनी हो, विद्वान हो, वा कोई और हो, मृत्यु के भय से मुक्त नहीं होता। वह मृत्यु के ख़्याल से ही डरता है, वह उसे अपने वा किसी प्यारे के लिए पसन्द नहीं करता। इसीलिए यदि उसे कोई द्वेष भाव से यह कहे "तू मर क्यों नहीं जाता" तो वह उसे अपने लिए गाली समझता है। वह एक-एक सख्त बीमारी में मृत्यु के भय से बहुत बेचैन होता है, क्योंकि वह इस पृथ्वी और यहां के घर और सम्पद, धन और सम्बन्धियों से परे अपने लिए किसी और लोक और सम्बन्धियों का ज्ञान नहीं रखता। इसीलिए वह अपने घर और धन और पदार्थ और किसी प्रिय सम्बन्धी आदि से वियोग होने का ख़्याल लाने से बहुत घबराता और क्लेश पाता है, और मृत्यु के द्वारा अपने नाना पदार्थों और सम्बन्धियों से छूट जाने के भिन्न अपने अस्तित्व के रहने के विषय में भी संदिग्ध चित्त होने से बहुत आशंकित रहता है।

फिर एक और बात जो इस सम्बन्ध में सोचने के योग्य है, वह यह है, कि जब किसी का सम्बन्धी इस दुनिया से उठ जाता है और उसे उसका कुछ पता नहीं होता, तब उसके साथ उसका कोई जीवन्त सम्बन्ध नहीं रहता, किन्तु धीरे-धीरे उसकी याद तक चली जाती है। यदि इस पृथ्वी में तुम्हारा कोई सम्बन्धी तुम से दूर रहता हो, तो तुम उसके साथ अपना सम्बन्ध टूटा हुआ अनुभव नहीं करते, तुम उसकी ख़बर रखते हो, उसके दुख दर्द का ख़याल रखते हो, उससे सहाय पाने और उसकी सहाय करने के लिए तैयार रहते हो; परन्तु जब वही जन मर जाता है, तब तुम मृत्यु और परलोक तत्व से अज्ञानी रहकर उसके साथ इस प्रकार का कोई सम्बन्ध अनुभव नहीं करते। पत्नी के मरने पर उसके साथ उसके पति का, भाई के मरने पर उसके भाई वा उसकी बहन का, गुरु के मरने पर उसके साथ उसके शिष्य का, मानो कोई जीवन्त सम्बन्ध नहीं रहता, और सब कुछ साफ हो जाता है। परन्तु जिन्हें मृत्यु और परलोक विषयक सत्य ज्ञान प्राप्त है, उनका जैसे इस लोक के सम्बन्धियों के साथ जीवन्त सम्बन्ध रहता है, वैसे ही उनके परलोक वासी हो जाने पर भी उन्हें अपने बेटे, बेटी, माता, पिता, दादा, दादी, भाई, बहिन और गुरु आदि के साथ जैसे यहां सम्बन्ध बोध होता है, वैसे ही उनके इस पृथ्वी के त्याग करने और किसी अन्य लोक में चले जाने पर भी।

देव धर्म प्रवर्तक ने मृत्यु और परलोक विषयक सत्य ज्ञान को लाभ करके परलोक यज्ञ और व्रत साधन विषयक जो विधि स्थापन की है, वह कैसी निराली है और मनुष्य मात्र के लिए कैसी हितकर है।

हिन्दुओं में यद्यपि परलोक वासियों के सम्बन्ध में श्राद्ध और तर्पण के नाम से जल और पिंड अर्पण करने की प्रथा प्रचलित है, परन्तु वह कैसी बेहूदा है। परन्तु हमारे यहां जिस श्राद्ध और तर्पण की शिक्षा दी जाती है, वह कैसी सत्य, कैसी श्रेष्ट और कैसी हितकर है। याद रखो कि परलोक तत्व विषयक सत्य ज्ञान के बिना परलोक यज्ञ विषयक कोई सच्ची और हितकर विधि स्थापन नहीं हो सकती। श्राद्ध क्या है? अपने किसी सम्बन्धी के सम्बन्ध में श्रद्धा के प्रकाश का कोई हितकर साधन। जब तक किसी मनुष्य में अपने किसी सम्बन्धी के किसी उच्च गुण वा उच्च भाव के लिए श्रद्धा का भाव जाग्रत न हो, तब तक वह उसके प्रति न श्रद्धा अनुभव कर सकता है, और न उसका प्रकाश कर सकता है; किन्तु कई बार अपनी नीच प्रकृति के वश होकर श्रद्धा के स्थान में अपमान मूलक नाना क्रियाओं का प्रकाश अवश्य कर सकता है। धर्म विहीन आत्मा अपने किसी श्रद्धेय सम्बन्धी के लिए न उसके इस पृथ्वी में विराजमान रहने के दिनों में श्रद्धावान हो सकता है, और न उसके परलोक वासी होने पर। धर्म विहीन आत्मा किसी सम्बन्धी से नाना उपकार पाकर भी अपने उपकार कर्ता की कोई महिमा नहीं देखता, और उसके प्रति श्रद्धावान वा सेवाकारी बनने के लिए कोई आकांक्षा अनुभव नहीं करता। इसीलिए जब तुम में अपने सम्बन्धियों के किसी शुभ गुण, वा अपने प्रति उनके किसी विशेष उपकार के लिए श्रद्धा और कृतज्ञता आदि भाव उदय न हो, तब तक उनके सम्बन्ध में तुम श्राद्ध का साधन नहीं कर सकते।

तर्पण क्या है? अपने किसी उच्च सम्बन्धी की किसी शुभ इच्छा को पूरी करके उसकी तृप्ति करना। अथवा किसी छोटे से छोटे सम्बन्धी के मंगल के लिए चेष्टा करके, उसके द्वारा अपने मंगल भाव की तृप्ति करना। इसलिए यदि हम सच्चा तर्पण करना चाहें, तो वह अंजली के द्वारा जल के उछालने से नहीं हो सकता। किन्तु इस बात के विचार के द्वारा कि हमारी गतियां कैसी हैं, और उन्हें देखकर हमारे परलोक वासी नाना उच्च सम्बन्धी तृप्ति पाते हैं वा नहीं, हम उनकी तृप्ति वा प्रसन्नता के लिए किसी नीच गति से निकलने और किसी उच्च गति के ग्रहण करने के लिए आकांक्षा अनुभव करने से हो सकता है।

अब जिन जिन साधनों के द्वारा इस प्रकार से सत्य श्राद्ध और तर्पण पूरा होता हो, वही साधन परलोक यज्ञ विषयक सत्य और श्रेष्ट साधन हो सकते हैं। और देव धर्म प्रवर्तक ने ऐसे ही नाना सत्य और शुभकर साधनों की परलोक के सम्बन्ध में शिक्षा दी है।

तब तुम देखों कि मृत्यु और परलोक विषय तत्व ज्ञान से मनुष्य समाज से कितना ही कुछ भय और दुःख दूर हो सकता है, और मनुष्य अपने परलोक वासी सम्बन्धियों और अपने आत्मा के लिए कितना हितकर बन जाता है। जीवनी शक्ति के सम्बन्ध में इस सत्य ज्ञान के मिलने से कि अनुकूल अवस्था में जैसे वह गर्भाशय में अपने लिए स्थूल शरीर निर्माण करती है, वैसे ही स्थूल देह के छोड़ने पर उसमें से सूक्ष्म परमाणुओं को खैंचकर अपने लिए सूक्ष्म शरीर निर्माण करती है और यह जीवनी शक्ति ही है, कि जो अपने लिए शरीर रचने का काम करती है, कोई मनुष्य स्थूल देह की मृत्यु से भयभीत नही होता, और नहीं हो सकता। और परलोक विषयक सत्य ज्ञान के मिल जाने से वह यह जानकार कि परलोक विषयक जिस दर्जे उच्च लोक में पहुंचना हो, उसके लिए उतने ही दर्जे उच्च जीवन के लाभ करने की आवश्यकता है, और उसमें उससे उतने ही दर्जे अधिक सुख शान्ति और आत्मा के विकास की अनुकूल सामग्री मिल सकती है, मनुष्य एक ओर नीच गति प्रद जीवन से मोक्ष और उच्च गति प्रद जीवन का आकांक्षी बनता है, और दूसरी ओर अपने परलोक वासी सम्बन्धियों के साथ धर्मगत सम्बन्ध स्थापन करके और परलोक यज्ञ

विषयक साधन करके अपना और उनका हित साधन करता है।

देव धर्म प्रवर्तक ने मृत्यु और परलोक तत्व विषयक जिस सत्य ज्ञान की शिक्षा दी है, वह ज्ञान कितना अमूल्य और कैसा निराला है, उसका वही जन अनुमान कर सकते हैं, जिन्हें इस महा श्रेष्ट ज्ञान के लाभ करने का अधिकार प्राप्त हुआ है। इस ज्ञान को पाकर तुम अपने परलोक वासी सम्बन्धियों के साथ धर्म गत सम्बन्ध स्थापन करके अपना और उनका आत्मिक हित साधन कर सकते हो, तुम अपने उच्च भावों के द्वारा उनके साथ हितकर योग स्थापन कर सकते हो और वह अपने उच्च भावों के द्वारा तुम्हारे साथ योग स्थापन कर सकते हैं। जिस व्योम में बिजली की लहर पैदा करके एक वैज्ञानिक जन तार के बिना सैकड़ों मील की दूरी पर एक और जन को खबर पहुंचा सकता है, उसी व्योम में तुम अपने उच्च भावों की लहर पैदा करके उन्हें अपने किसी परलोक वासी प्रिय सम्बन्धी तक पहुंचा सकते हो। यह सारी नेचर व्योम (ईथर) से भरी हुई है, और जैसे बिजली की लहर व्योम के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुंचती है, वैसे ही हमारी भाव मूलक चिन्ता की लहरें एक स्थान के सम्बन्धियों से निकल कर दूसरे स्थान के सम्बन्धियों तक पहुंचती हैं। इसी नियम के द्वारा दूर स्थान में बैठा हुआ शिष्य, अपने हृदय का अपने धर्म गुरु के साथ योग करता है, तो हमारी देव ज्योति और शक्ति उस तक पहुंचती है। और कोई धर्म आकांक्षी जब हमारा ध्यान करे हम तक अपने हृदय के उच्च भाव से परिचालित होकर उस की ऐसी लहर हम तक पहुंचाता है, कि "हे पूजनीय भगवान्! जिस प्रकार से आप अमुक सत्य को अपनी ज्योति में देखते हैं, उसी प्रकार तुम्हारी ज्योति पाकर मैं भी उसे उसी रूप में देख सकूं; जिस प्रकार आप अमुक पाप को घृणा करते हैं, उसी प्रकार घृणा शक्ति को पाकर मैं भी उसे घृणा कर सकूं, जिस प्रकार आप अमुक भलाई को प्यार करते हैं, उसी प्रकार तुम्हारी इस प्यार शक्ति को पाकर मैं भी उसे उसी प्रकार प्यार कर सकूं"; तो निश्चय हमारी ज्योति और शक्ति उसे प्राप्त होती है। और जो शिष्य इस प्रकार हृदय गत कामना कर सकता है, वही सच्ची प्रार्थना करता है, और उसी की प्रार्थना सफल होती है। देवात्मा के साथ इस प्रकार का हृदय गत योग करके प्रत्येक स्थान से उनका योग्य शिष्य उनकी सच्ची पूजा कर सकता है। तुम अपने प्रिय परलोक वासी सम्बन्धियों को भी इस प्रकार स्मरण करके, उनके उच्च परिवर्तन, और उनके उच्च जीवन के विकास के लिए मंगल कामना करके उनका भला कर सकते है, और वह अपनी शुभ कामनाओं के द्वारा तुम्हारे हित साधन में सहायक बन सकते हैं।

अब यदि तुम्हें मृत्यु और परलोक तत्व विषयक ज्ञान प्राप्त हुआ हो, तो तुम अपने प्रिय सम्बन्धियों से उदासीन और बाग़ी नहीं रह सकते। तुम अपने आत्मा की गतियों से बेसुध नहीं रह सकते, अपने आत्मा को नीच गतियों से मोक्ष देने और उच्च गतियों में विकसित करने की ओर से बेपरवाह नहीं हो सकते। तुम में से जिस-जिस ने इस सत्य ज्ञान की ज्योति को पाकर अपने परलोक वासी सम्बन्धियों के सम्बन्ध में परलोक यज्ञ विषयक जहां तक किसी प्रकार का साधन किया है, वह वहां तक अपने आपको इस समय कृतार्थ अनुभव कर सकता है। तुम में से जो जन अपने आपको इस प्रकार कृतार्थ अनुभव करते हों, उन्हें इस यज्ञ के स्थापन कर्ता की महिमा को सम्मुख लाना चाहिए। और उनकी शिक्षा से तुम्हारा जो जो कुछ उपकार हुआ हो, उसे स्मरण करके उनके साथ अपने सम्बन्ध को गाढ़ करना चाहिए। ऐसे जीवन दाता गुरु के साथ तुम्हारा जितना सम्बन्ध गाढ़ होगा, उतना ही और नाना सम्बन्धों के साथ तुम्हारा शुभकर सम्बन्ध स्थापन होगा। हमारी यह हार्दिक आकांक्षा है,

Published on 5th of the month
20
Regd. Postal No.CHD /0077/ 2018-2020
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

कि तुम अपने जीवन दाता के अनुरागी और अधिक से अधिक अनुरागी शिष्य बनकर उनकी धर्म विषयक और सत्य शिक्षा के भिन्न उनके मृत्यु और परलोक विषयक सत्य ज्ञान को प्राप्त होकर और परलोक यज्ञ विषयक साधनों के अधिकारी बनकर अपने और अपने परलोक वासी सम्बन्धियों के लिए भलीभांत शुभकर प्रमाणित हों।

महोत्सव मुबारक नज़दीक आ रहा है।

पाठकगण यह जानकर खुशी महसूस करेंगे कि इस बार परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 169 वां शुभ जन्म महोत्सव 11 दिसम्बर बुधवार से 14 दिसम्बर शनिवार तक पूरे चाव भाव से हर साल की तरह मनाया जाएगा। सब साथी सेवक अभी से उपरोक्त दिनों को ध्यान में रखने की कृपा करें और इन दिनों को अभी से सुरक्षित रख लें।

– मंत्री

सूचना

श्री अकबरपुर देव समाज समिति एवं विज्ञानमूलक शिक्षा प्रसार समिति श्री अकबरपुर कानपुर देहात उ० प्र० (रजिस्टर्ड) का विलय देवसमाज(जी) चण्डीगढ़ पंजीकृत संस्था के साथ हो गया है। देव समाज (जी) चण्डीगढ़ संस्था की ओर से श्री अकबरपुर यात्रा पार्टी का प्रोग्राम दिनांक 17 से 20 अक्तूबर 2019 तक निश्चित हो चुका है। इच्छुक धर्म सम्बन्धी प्रबन्धक देव समाज पब्लिक स्कूल अकबरपुर श्रीमान किशन सिंह चौहान के मोबाईल न. 9369415961 से सम्पर्क कर सकते हैं।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री–देव–धर्म–मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts